लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय, मोतीहारी,
पूर्वी चम्पारण, बिहार

निर्गुण संतकाव्य परंपरा के कवि - कबीरदास

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

1. कबीरदास →

जन्मकाल – 1398 ई. (1455 वि.)

तथ्य – "चौदह सौ पचपन साल गये, चन्द्रवार एक ठाठ भये।
जेठ सुदी बरसायत को, पूरणमासी तिथि प्रकट भये॥

जन्म स्थान – काशी / वाराणसी / बनारस

जन्म के सम्बन्ध में किंवदन्ती → जनश्रुतियों के अनुसार कबीर का जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था जिसने लोकलज्जा के कारण इनको जन्म देकर काशी के लहरतारा नामक तालाब के किनारे पर छोड़ दिया था।

मृत्युकाल → 1518 ई (1575 वि.) (120 वर्ष)

तथ्य :- "संवत पन्द्रह सौ पचहत्तर, कियो मगहर को गौन।
माघ सुदी एकादशी, रल्यो पौन में पौन॥"

मृत्यु स्थान → मगहर

गुरू का नाम → स्वामी रामानन्द

नोट:- कबीर के मुसलमान अनुयायियों के अनुसार इनके गुरू का नाम '<u>शेख तकी</u>' माना गया है।

पिता का नाम → नीरू
माता का नाम → नीमा
पत्नी का नाम → लोई
पुत्र व पुत्री का नाम → कमाल व कमाली

काव्य भाषा – सधुक्कड़ी

नोट:- कबीरदासजी ने अपनी रचनाओं किसी एक भाषा का प्रयोग नहीं करके राजस्थानी, बंगाली, ब्रज, पूर्वी बोली, खड़ी बोली इत्यादि अनेक भाषाओं का प्रयोग किया है इस मिश्रित भाषा को आचार्य शुक्ल ने सधुक्कड़ी भाषा तथा बाबू श्याम सुन्दर दास ने 'पचमेल खिचड़ी भाषा' कहकर पुकारा है।

प्रमुख रचना → डा. नगेन्द्र के अनुसार कबीर द्वारा रचित रचनाओं की कुल संख्या 63 मानी जाती है परन्तु इनमें से इनकी सर्वप्रमुख या सबसे प्रामाणिक रचना 'बीजक' मानी जाती है।

नोट:- (1) कबीर अनपढ़ संत कवि थे इनके बारे में कहा जाता है कि इन्होंने कागज, कलम, स्याही को हाथ भी नहीं लगाया था अत

"मसि कागद छुओ नहिं, कलम गहि नहिं हाथ।
चारिउ जग को महातम, मुखहि जनाइ <u>बात</u>॥"

अर्थात् कबीरदास अपने अनुभव के आधार पर अपने मुख से पद बोलते रहते थे एवं उनके शिष्य उनका संकलन करते रहते थे।

(ii) इनकी 'बीजक' रचना का संकलन इनके एक प्रमुख शिष्य धर्मदास के द्वारा 1464 ई. में किया गया था

(iii) इस बीजक रचना को निम्नानुसार तीन भागों में विभाजित किया गया है।

(क) साखी
(ख) सबद
(ग) रमैनी

(क) साखी → इस भाग में कबीर द्वारा रचित दोहों का संकलन किया गया है इस भाग में सधुक्कड़ी भाषा का अधिक प्रयोग हुआ है कबीर के अधिकतर दोहों में सम्प्रदायवाद का विरोध करते हुए नीतिगत शिक्षाएँ दी गई हैं।
इस साखी भाग को भी पुनः 59 अंगों में उप-विभाजित किया गया है।
सर्वप्रथम अंग → गुरुदेव को अंग
सबसे अंतिम अंग → अबीहड़ को अंग

विशेष तथ्य → संत साहित्य की रचनाओं को 'अंग' नाम से विभजित करने की परम्परा सर्वप्रथम 'रज्जब' कवि के द्वारा डाली गई थी।

(ख) सबद → इस भाग में कबीरदास द्वारा रचित पदों का संकलन किया गया है इस भाग में ब्रज की प्रधानता के साथ खड़ी बोली के शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है।
(गेयपद)

(ग) रमैनी → इस भाग में कबीरदास द्वारा रचित राम (ब्रह्म) विषयक चौपाईयों का संकलन किया गया है इस भाग में भी ब्रज की प्रधानता के साथ पूर्वी बोली के शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है।

अन्य विशेष तथ्य →

(1) कबीरदास ने अपनी रचनाओं में अत्यधिक कठोर भाषा का प्रयोग किया है जिसको देखकर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इनको 'वाणी का डिक्टेटर' कहकर पुकारा है

(2) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने ही इनको भगवान विष्णु के 'नृसिंहावतार की प्रतिमूर्ति' भी कहकर पुकारा है।

(3) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इनकी प्रशंसा करते हुए एक जगह लिखा है।

"प्रतिभा इनमें बड़ी प्रखर थी।"

(4) भारतीय राजनैतिक दृष्टि से कबीरदास 'सिकन्दर लोदी' के समकालीन कवि माने जाते हैं सिकन्दर लोदी के द्वारा इनको अनेक यातनाएं दिये जाने का भी उल्लेख मिलता है।

'सलोकु' (5) कबीर दास द्वारा रचित कुछ पदों को सिख धर्म के पवित्र ग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में भी 'सलोकु' के नाम से संकलित किया गया है।

→ ये ज्ञानाश्रयी संत काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि भी माने जाते हैं।